वर्ष : 14 अंक : 4 अक्टूबर–दिसम्बर 2019

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. तेज प्रताप, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. अनुराधा दत्ता, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादकः डा. बी. डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

कुलपति संदेश

'पंत प्रसार सन्देश' पत्रिका का अक्टूबर–दिसम्बर, 2019 (वर्ष 14:4) अंक आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रसार गतिविधियों को संकलित कर प्रबुद्ध वर्ग में प्रस्तुत करने से वैज्ञानिकों एवं प्रसार कर्मियों को प्रेरणा मिलती है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे ऐसा मेरा विश्वास है। प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में आयोजित "अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी" नवीनतम कृषि तकनीकों को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जिसमें किसानों की भारी भागीदारी हमारा उत्साहवर्धन करती है। हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि विगत त्रैमास में 106 वां अखिल भारतीय किसान मेला का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें कृषि विकास हेतु कार्यरत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फर्मों तथा हजारों किसानों ने हमें बहुत प्रेरित किया है। इस वर्ष 107 वां अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन मार्च 03–06, 2020 में किया जा रहा है, जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं। इस पत्रिका द्वारा पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में मददगार होगी।

शुभकामनाएँ।

(तेज प्रताप)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- प्रशिक्षण के अन्तर्गत फसल प्रबन्धन, पौध सुरक्षा, जैव कीटनाशकों का प्रयोग, खाद्य पदार्थों का मूल्य संवर्धन, कृषि प्रसार विषय पर 08 प्रशिक्षणों का आयोजन कर कुल 163 कृषकों को केन्द्र द्वारा विकसित नवीनतम नकनीकों की जानकारी देकर प्रशिक्षित किया गया।
- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अर्न्तगत माह अक्टूबर में 50 कृषकों के प्रक्षेत्र पर 1.0 हे. क्षेत्रफल में पोषण वाटिका तैयार करवाई गयी। प्रजातीय प्रदर्शन के अन्तर्गत गेहूँ की एच.डी. 2967, यू.पी. 2572 प्रजातियों को 7.0 हे. क्षेत्रफल में 60 कृषकों के प्रक्षेत्र पर तथा क्लस्टर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन. के अन्तर्गत मसूर की पीएल 8 प्रजाति 10.0 हे. क्षेत्रफल में 160 कृषकों तथा तोरिया की उत्तरा व पंत पीली सरसों–1 प्रजाति 10.0 हे. क्षेत्रफल 126 कृषकों के प्रक्षेत्र पर लगायी गयी।
- प्रथम पक्ति प्रदर्शन की तकनीकों के प्रचार–प्रसार हेतु केन्द्र द्वारा 2 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन कर फसलों व सब्जियों की नई प्रजातियों की जानकारी दी गयी।
- नवम्बर 09, 2019 को राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर गोरलचौड़ मैदान, चम्पावत में कृषि प्रदर्शनी लगाकर कुल 176 कृषकों को कृषि सम्बन्धी नई तकनीकों की जानकारी दी गई।
- दिसम्बर 18, 2019 को कृषि विभाग, चम्पावत की सहभागिता से बीज ग्राम योजना के अन्तर्गत ग्राम खर्ककार्की में गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 58 कृषकों ने भाग लिया। कृषकों को विभिन्न फसलों के बीज बनाने व उनके भण्डारण तकनीकों की जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा महिला मंगल दल एवं स्वयं सहायता समूहों की 06 बैठकों में प्रतिभाग कर कुल 240 कृषकों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं एवं सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषि सम्बन्धी योजनाओं की जानकारी दी गयी।
- गाँधी जी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर केन्द्र पर विद्यार्थियों हेतु पालीथीन के प्रयोग से वातावरण को होने वाले क्षति विषय पर विचार गोष्ठी का

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

आयोजन किया गया, जिसमें राजीव नर्वोदय विद्यालय के कुल 28 बच्चों ने प्रतिभाग किया। इसी क्रम में दिसम्बर 16–31, 2019 तक स्वच्छता पखवाड़ा का भी आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत ग्राम सुई, डुगरी, चनकान्डे, खर्ककार्की में समय–समय पर रैली, गोष्ठी, विचार विमर्श आदि के माध्यम से 133 लागों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अवशेषों को जलाने के स्थान उनसे कम्पोस्ट बनाकर अधिक से अधिक कृषि उत्पादन प्राप्त करने तथा वातावरण को शुद्ध बनाये रखने हेतु किसानों को जागरूक किया गया।

- कुल 139 कृषकों ने केन्द्र प्रक्षेत्र के पालीहाउस, जल संग्रहण इकाई, गृह विज्ञान इकाई का भ्रमण कर विभिन्न तकनीकी जानकारियॉ प्राप्त की।
- केन्द प्रक्षेत्र पर पत्तागोभी की टी 621, वरूण, फूलगोभी की स्नोमिस्टिक तथा प्याज की गौरन प्रजाति की 22250 पौध कृषकों को वितरित की गई। केन्द्र के 200 वर्ग मीटर पॉली हाउस में गोभी की स्नोमिस्टिक प्रजाति लगाकर 165 कि.ग्रा. तथा 200 वर्ग मीटर पॉली हाउस से शिमला मिर्च (कैलाफोर्निया वन्डर प्रजाति) का 520 कि.ग्रा. उत्पादन प्राप्त कर किसानों को संरक्षित खेती के लिए प्रेरित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम दिसम्बर 16–31, 2019 तक का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से जवाहर नवोदय विद्यालय, बणसू एवं आर्दश बाल विद्या मन्दिर, देवशाल के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके साथ ही आस–पास के गांवों एवं बाजारों में सभी दुकानदारों से आग्रह किया कि वो आने वाले उपभोक्ताओं को प्लास्टिक के थैले में सामान न दें तथा ग्राहकों को कपड़े का थैला घर से लेकर आने के लिये प्रेरित करें। इस कार्यक्रम के दौरान ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय भागीदारी रही एवं कृषि विज्ञान केन्द्र में प्रशिक्षण हेतु आने वाले प्रशिक्षणार्थियों को स्वच्छता के महत्व पर चलचित्र व पी.पी.टी. के माध्यम से स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गयी।
- केन्द्र पर अक्टूबर 22, 2019 को उर्वरक उपयोग जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जनपद के 205 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य विकास अधिकारी, जनपद–रुद्रप्रयाग द्वारा की गयी। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी द्वारा प्रक्षेत्र का भ्रमण किया गया एवं केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की गई। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा जिले में संरक्षित खेती व कीवी की बागवानी को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र द्वारा किये जा रहे कार्यो की सरहाना की तथा प्रगतिशील कृषक श्री बलवीर सिंह राणा ग्राम गैंड को सम्मानित किया गया। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. संजय सचान, ई. यू.के. सक्सेना एवं डा. डी.के. चौरासिया द्वारा उर्वरक उपयोग जागरुकता कार्यक्रम पर अपने विचार व्यक्त किये।

उर्वरक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

- विकास खण्ड ऊखीमठ में केन्द्र द्वारा दिसम्बर 24, 2019 को किसान दिवस का आयोजन किया गया। केन्द्र द्वारा विभिन्न कृषि प्रौद्योगिकी 13 प्रथम पंक्ति प्रदर्शन 19.7 हे. क्षेत्रफल में लगाये गये तथा 26 प्रशिक्षण आयोजित किये जा गये हैं, जिससे क्रमशः 540 एवं 500 कृषक लाभानवित हुये हैं। केन्द्र के वैज्ञानिक डा. नीलकांत द्वारा रेडियों भेंटवार्त्ता सर्दियों के मौसम में पशु स्वास्थ्य की देखभाल एवं डा. डी.के. चौरासिया द्वारा बागों में सामयिक कार्य शीर्षक पर आकाशवाणी देहरादून से प्रसारित की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा 22 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 452 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया। इन प्रशिक्षणों द्वारा कृषकों को कृषि एवं कृषि सम्बन्धी व्यवसायों की वैज्ञानिक तकनीकों की नवीनतम जानकारी प्रदान की गई।
- रेखीय विभाग के प्रसार कार्यकर्त्ताओं के लिए केन्द्र पर 02 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 40 कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया।
- केन्द्र द्वारा 256 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया, जिसमें 60.88 है. कृषक प्रक्षेत्रों पर प्रदर्शनों को लगाया गया। साथ ही 59 कृषक प्रक्षेत्र परीक्षणों का आयोजन 10.66 है. प्रक्षेत्र पर किया गया। इसके द्वारा कृषकों तक कृषि, गृह विज्ञान तथा पशुपालन की नवीनतम तकनीकी कृषकों तक पहुंचायी गयी।
- केन्द्र द्वारा ग्रामीण युवाओं हेतु 02 पांच दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिनमें 16 युवक/युवतियों को मशरूम उत्पादन तथा मधुमक्खी पालन की जानकारी दी गई।
- उर्वरकों के सही उपयोग के विषय में जागरूकता हेतु अक्टूबर 22, 2019 को एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्रीय मंत्री द्वारा इस कार्यक्रम के उद्घाटन का सीधा प्रसारण दूरदर्शन पर सभी उपस्थित कृषकों को दिखाया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि मंत्री, भारत सरकार के

जागरूकता कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए वैज्ञानिक

अभिभाषण को भी कृषकों को दिखाया गया। साथ ही साथ फसलों में उर्वरकों के समेकित प्रबन्धन पर परिचर्चा का भी अवलोकन किया गया। इस कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिकों व अन्य कार्मिकों के साथ–साथ रेखीय विभागों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।

- केन्द्र के तत्वाधान में नवम्बर 21, 2019 में ''विश्व मात्स्यिकी दिवस'' का आयोजन किया गया। मत्स्य विभाग, हरिद्वार द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में जनपद के अनेक प्रगतिशील मछली पालकों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में मछली पालन से जुड़ी सरकारी योजनाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर

चर्चा की गई। उपस्थित मछली पालकों के शंकाओं का भी समाधान किया गया।

- केन्द्र के तत्वाधान में दिसम्बर 05, 2019 को ''विश्व मृदा दिवस'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जनपद के विभिन्न ग्रामों से प्रगतिशील कृषकों ने केन्द्र द्वारा आयोजित गोष्ठी में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में मृदा

विश्व मृदा दिवस का आयोजन

परीक्षण के महत्व व मृदा नमूने लेने की विधि पर विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही खेती में फसलों और मृदा के अनुसार पोषक तत्वों के प्रबन्धन के विषय में भी विस्तृत जानकारी दी गई।

- केन्द्र द्वारा दिसम्बर 16–31, 2019 तक स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम केन्द्र के सभी कार्मिकों द्वारा स्वच्छता की शपथ ग्रहण की गई। स्वच्छता की जागरूकता फैलाने हेतु अभियान चलाया गया और ग्रामीणों को स्वच्छता के महत्व की जानकारी दी गई। छात्र–छात्राओं के मध्य भी स्वच्छता की अलख जगाने हेतु एक निबन्ध लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। प्रेस व अन्य मीडिया को इस अभियान से जोड़ने हेतु उनके प्रतिनिधियों को भी इसमें सम्मिलित किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के प्रक्षेत्र पर वृक्षारोपण भी किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना–एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा 08 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गये, जिससे 162 (पुरूष 98 एवं 64 महिला) कृषक लाभान्वित हुए। ग्रामीण युवाओं को केन्द्र पर 01 प्रशिक्षण दिया गया, जिससे कुल 10 ग्रामीण युवा लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में सब्जी मटर–1.0 हे., प्याज–2.0 हे., व बकरी–05 और मुर्गी–10 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में लगाये गये है।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 30 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 228 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु किसानों द्वारा 197 भ्रमण किये गये, जिसमें 487 किसान लाभान्वित हुए। कृषि तकनीक के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा दैनिक समाचार पत्र में 02 समाचारों को प्रकाशित किया गया।

केन्द्र पर भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन

- केन्द्र पर कृषकों को उन्नत प्रजाति की पौध जैसे सब्जियों में प्याज–4000 व कीवी–30 पौधे कृषकों को विक्रय किए गए है।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अक्टूबर 22, 2019 को खाद का सही उपयोग जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 79 महिला किसानों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों/कर्मचारियों द्वारा त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में योगदान दिया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा दिसम्बर 05, 2019 को विश्व मृदा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 58 कृषको ने प्रतिभाग किया, जिन्हें मृदा स्वास्थ्य कार्ड भी वितरित किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा 18 प्रशिक्षण (कृषक प्रशिक्षण, ग्रामीण युवाओ एवं प्रसार कार्यकर्ताओ) कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 308 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए कृषक

- रेखीय विभागों द्वारा आयोजित 03 कृषि गोष्ठियों में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया, जिसमे 182 कृषक भाग लिए। वैज्ञानिकों द्वारा 21 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 334 कृषक उपस्थित थे।
- केन्द्र पर अक्टूबर 15, 2019 को महिला दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 37 महिला कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- अक्टूबर 22, 2019 को केन्द्र पर खाद् एवं उर्वरक उपयोग पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 104 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस कार्यक्रम में रेखीय विभागों के अधिकारी कर्मचारियों ने भी प्रतिभाग किया।
- नवम्बर 16, 2019 को विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान–हवालबाग, अल्मोड़ा में एक दिवसीय किसान मेले का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्र द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी कृषकों को प्रदान की गयी। इस अवसर पर कृषकों को उपयोगी प्रसार प्रपत्र भी वितरित किये गये। इस कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न जिलों के 517 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- दिसम्बर 16–31, 2019 तक केन्द्र पर स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र परिसर, केन्द्र प्रक्षेत्र एवं विभिन्न गांवों व शैक्षिक संस्थानों में जाकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/गतिविधियाँ

- डा. सरिता श्रीवास्तव ने ''फ्यूचर आफ प्रोटीन समिटः विल्डिंग द फूड सिस्टम आफ टुमारो'' विषय पर गुड फूड इंस्टीटूयट एंड हयूमन सोसाइटी इन्टरनेशनल इंडिया द्वारा नवम्बर 11–12, 2019 को आयोजित कान्फ्रैंस में वक्ता के रूप में भाग लिया।
- डा. सरिता श्रीवास्तव, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, खाद्य एवं पोषण विभाग ने दिसम्बर 12, 2019 को समेटी, प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर में ''यूज ऑफ मलबरी लीवस इन हयूमन न्यूट्रीशन विषय'' पर प्रशिक्षण दिया।
- डा. सरिता श्रीवास्तव, प्राध्यापक एवं विभगाध्यक्ष, खाद्य एवं पोषण विभाग ने दिसम्बर 17, 2019 को हिमालयन प्रोग्रेसिव स्कूल, किच्छा में विद्यार्थियों को ''हेल्दी डाइट'' पर व्याख्यान दिया।
- नवंबर 07, 2019 को श्रीमती प्रेरणा गुप्ता, गुड़गांव, हरियाणा की फ्रीलांसर डाइटीशियन ने खाद्य एवं पोषण विभाग की पी. जी. छात्राओं को शीर्षक ''द प्रोफेशन ऑफ डाइटीशियन'' पर व्याख्यान दिया।
- ग्लोबल परस्पेक्टिव इन एग्रीकल्चरल एंड एप्लाइड सांइसेज फॉर फूड एण्ड एनवारमेंटल सिक्योरिटी विषय पर दिसम्बर 01–02, 2019 को नैनीताल में आयेजित कान्फ्रेंस में डा. रोशन खान, डा. अनुराधा दत्ता, डा. रीता एस. रघुवंशी, डा. सी.एस. चोपड़ा एवं डा. ए.के. शुक्ला द्वारा लिखित शीर्षक ''फारम्यूलेशन आफ न्यूट्रिएंट डेन्स बिस्किट एन इफर्ट टु अचीव फूड सीक्योरिटी' पर व्याख्यान दिया व बेस्ट पोस्टर का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- इंडो–फ्रेंच एक्सचेंज प्रोग्राम के अंतर्गत खाद्य एवं पोषण विभाग की बी.एस. सी. होमसाइंस की तीन छात्राओं ने नवम्बर व दिसम्बर, 2019 में दो माह की इंर्टनशिप EPLEFPA CHARTRES, France में पूर्ण की।

फ्रांस में इंटर्नशिप के दौरान विश्वविद्यालय की छात्राएं

- खाद्य एवं पोषण विभाग में DEFIAA प्रोग्राम के अंतर्गत पी.एच.डी. हयूमन न्यूट्रीशन की 02 छात्राओं का चयन दो महीने की इंटर्नशिप (जनवरी 26, 2020–मार्च 20, 202.) के लिये फ्रांस EPLEFPA RODEZ-AGRUCAMPUS LA ROQUE में हुआ है।
- अखिल भारतीय समान्नित शोध परियोजना (गृह विज्ञान प्रसार) द्वारा अक्टूबर 11, 2019 को सूर्यजाला गांव (नैनीताल) में वर्मीकम्पोस्ट विषय पर जानकारी दी गयी एवं ग्रामीण महिलाओं को वर्मीकम्पोस्ट निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया गया।
- अक्टूबर 21 एवं अक्टूबर 23, 2019 को अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना (गृह विज्ञान प्रसार) के अन्तर्गत जलवायु संरक्षण के तरीकों पर प्रशिक्षण दिया गया एवं वृक्षारोपण किया गया।
- अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना गृह विज्ञान प्रसार विभाग के अन्तर्गत नवम्बर 25, 2019 को लमजाला एवं सूर्यजाला गांव (नैनीताल) में पशु चिकित्सा महाविद्यालय के सहयोग से पशु चिकित्सा टीकाकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत उन्हें पशुओं के विभिन्न रोग, लक्षण एवं बचाव की जानकारी दी गयी। साथ ही ग्रामीण परिवारों का भ्रमण कर उनके पशुओं गाय, भैंस, बकरी, मुर्गी आदि की जांच की गयी।

सफलता की कहानी

1. गेंदे की खेती लायी समृद्धि की बयार: (कृषि विज्ञान केन्द्र, रूद्रप्रयाग)

श्रीमती सुखदेई बिष्ट, गाँव–कण्डारा, ब्लॉक–अगस्त्यमुनि, जिला–रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड की प्रगतिशील महिला किसान हैं। श्रीमती सुखदेई बिष्ट के पास कुल 7 नाली (0.14 हे.) कृषि योग्य भूमि है। उन्होंने वर्ष 2017 में, राज्य सरकार के कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) कार्यक्रम के तहत कृषि विज्ञान केंद्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग) में आयोजित केन्द्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। केन्द्र के प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान उन्होंने शोभाकारी प्रदर्शन प्रखण्ड में गेंदा और अन्य फूलों को खिलते हुए देखा तो आकर्षक गेंदा फूल ने उनका मन मोह लिया। उन्होंने केन्द्र के वैज्ञानिकों के साथ फूलों की खेती सम्बन्धी आवश्यक तकनीकी जानकारी, जंगली जानवरों से सुरखा और वर्तमान में उपलब्ध विपणन और अन्य समस्याओं के बारे में उत्साहपूर्वक बातचीत की। वर्ष 2016 में आपने स्थानीय उपलब्ध गेंदा के पौधों को उगाया लेकिन फूलों की गुणवत्ता व उपज संतोषजनक नहीं थी और विपणन में भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। विपरीत परिस्थितियों के बाद भी आप पीछे नहीं हटी एवं पुनः वैज्ञानिकों से सम्पर्क किया। वैज्ञानिकों ने उन्हें प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन के माध्यम से गेंदा की उन्नत खेती की तकनीक सिखाई। मन्दिर एवं अन्य शुभ अवसरों पर गेंदा के बढ़ते उपयोग से आपको एक बार पुनः इसकी खेती करने की प्रेरणा मिली।

प्रगतिशील महिला कृषक द्वारा की गई गेंदे की खेती

मार्च, 2017 में कृषि विज्ञान केंद्र, जाखधार के वैज्ञानिकों के मार्ग निर्देशन में श्रीमती सुखदेई बिष्ट के खेत में 01 नाली (0.02 हे.) क्षेत्र में गेंदा प्रजाति पूसा नारंगी की 1666 पौध का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के तहत प्रत्यारोपण किया। श्रीमती बिष्ट, द्वारा गेंदा की फसल की नियमित देखभाल की गई तथा वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए सुझावों के अनुसार सस्य क्रियाओं और पौधों की सुरक्षा सिफारिशों के पैकेज का पालन किया। गेंदा फूलों की पहली तुड़ाई पौध प्रतिरोपण के 60 दिन बाद की गई और उससे 10.5 कि.ग्रा. गेंदे के फूल मिले। उसके बाद प्रत्येक 4–5 दिनों के अंतराल पर फूलों की तुडाई की गयी। इस प्रकार कुल सोलह बार (मई के दूसरे सप्ताह से सितंबर के दूसरे सप्ताह तक) गेंदे के फूलों की तुड़ाई की गई, जिससे कुल 1.90 क्विंटल गेंदे के फूलों की पैदावार मिली । पूसा नारंगी गेंदे के फूल बेहतर रंग, आकार और गुणवत्ता के थे, जिनकी स्थानीय गेंदे के फूलों की तुलना में अधिक धनराशि मिली। श्रीमती बिष्ट द्वारा 105 कि.ग्रा. गेंदे के फूलों को खुले फूलों (लूज फ्लोवर) के रूप में और शेष 85 कि.ग्रा. फूलों से माला बनाकर, भगवान केदारनाथजी की यात्रा के दौरान, स्थानीय उत्सवों त्योहारों एवं विवाह समारोह आदि में विक्रय किया गया, जिससे कुल रु. 22,250.00 की आय प्राप्त की। श्रीमती सुखदेई बिष्ट ने बताया कि खेत की जुताई, क्यारियों को तैयार करने, रोपाई, सिंचाई, तुडवाई, माला बनाने और परिवहन आदि पर कुल रु. 12,100.00 का व्यय हुआ और इन सभी कार्यो में उनके बेटे और पुत्रवधू ने भी सहयोग किया। इस प्रकार श्रीमती बिष्ट को 1 नाली क्षेत्रफल में गेंदे की खेती से कुल रु. 10,150.00 का शुद्ध लाभ हुआ।

सफलता से उत्साहित हो कर श्रीमती बिष्ट वैज्ञानिकों के सहयोग से हरबेसियस कटिंग के माध्यम से गेंदे के पौधों से नये पौधे बनाना सीखीं और जून के तृतीय सप्ताह में हरबेसियस कटिंग से तैयार पौधों को खेतों की मेड़ पर दोहरी पंक्ति में 01 नाली क्षेत्र (0.02 हे.) में रोपाई की। इस फसल से आपने गेंदे के फूलों की कुल 15 तुड़ाई की। इस प्रकार एक साल में दूसरी गेंदा की फसल से 1.65

क्विंटल गेंदे के फूल प्राप्त किए, जिससे कुल रु. 18,700.00 की आय प्राप्त की। श्रीमती सुखदेई बिष्ट के अनुसार गेंदे फूल के उत्पादन, माला बनाने व बाजार भेजने इत्यादि पर कुल रु. 10,250.00 की लागत आयी। इस प्रकार उन्हें गेंदे की दूसरी फसल से कुल रु. 8,450.00 का शुद्ध लाभ हुआ। इस प्रकार एक वर्ष में गेंदे की दो फसलों, पहली फसल (मार्च से सितम्बर) व दूसरी फसल (जून से नवम्बर) से कुल रु. 20,500.00 की शुद्ध आय प्राप्त की। अब वह प्रत्येक साल गेंदे की दो फसलें उगाती हैं और खुले फूलों (लूज फ्लोवर) के रुप में व माला बना कर बेचती है। श्रीमती सुखदेई बिष्ट गेंदा की उन्नत किस्म पूसा नारंगी का उपयोग करके और विशेष रूप से मूल्य संवर्धन के रूप में माला बनाकर आय में वृद्धि, विशेष रूप से यात्रा के मौसम के दौरान फूलों की कमी होने के कारण मिलने वाले मूल्य को उचित ठहराती हैं। गेंदा की माला बनाने के कारण वह गेंदा की खेती से अधिक लाभ प्राप्त करती है और उन्होंने गेंदा के फूलों और मालाओं की सीधी बिक्री करके अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए जिला रुद्रप्रयाग के किसानों के बीच एक आदर्श पुष्प कृषक की पहचान बनायी है। वर्ष 2018 में उन्हें गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा आयोजित 102 वें अखिल भारतीय उद्योग प्रर्दशनी और किसान मेले में जनपद रुद्रप्रयाग से प्रगतिशील किसान पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

प्रजाति प्रतिस्थापन के इस तकनीकी हस्तक्षेप के परिणाम से आसपास के गांवों के किसान बहुत प्रभावित हुए है। किसानों की राय है कि प्रजाति प्रतिस्थापन करके, वे पारंपरिक फसलों के स्थान पर गेंदा की खेती से बेहतर आय प्राप्त कर सकते हैं और बंदर भी इस फसल को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते है। इस प्रकार गेंदे की खेती को बन्दर से बचाव हेतु एक बेहतर विकल्प के रुप में देखा जा रहा है। वर्ष 2017–18 और 2018–19 में आसपास के गाँवों के किसानों ने अपने–अपने गाँवों में भी गेंदा की खेती की, जिसके उत्साहवर्धक परिणाम देखने को मिले है।

श्रीमती सुखदेई बिष्ट कहती है कि "हम पूसा नारंगी गेंदा की उपज से बहुत खुश हैं, फूल के गहरे नारंगी रंग ने पिछले तीन वर्षों में हमारे जीवन को सुखमय बना दिया है" तथा इसका श्रेय कृषि विज्ञान केंद्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग) को देती है कि केन्द्र के सम्पर्क में होने के कारण ही उन्हें जनपद में प्रगतिशील महिला कृषक के रुप में मान–सम्मान प्राप्त हो रहा है।

2. सामान्य ग्रामीण युवती से एक सफल उद्यमी तक: (कृषि विज्ञान केन्द्र, देहरादून)

विषम पारिवारिक स्थिति, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, महिलाओं की स्वत्रंतता, कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते अत्यन्त परेशान श्रीमती श्यामा देवी, निवासी ग्राम–फतेहपुर, विकास खण्ड–विकास नगर ने गांव की ही अन्य महिलाओं के साथ मिलकर एक महिला स्वयं सहायता समूह की स्थापना की। आधिकारिक रूप से "महिला जागृति समूह" की स्थापना सितम्बर 19, 2012 को की गयी। समूह का उद्देश्य था कि गांव की महिलाएं अपनी आजीविका के लिए कुछ पैसा कमायें।

प्रगतिशील महिला कृषक द्वारा बनाये गये जूट के बैग

रास्ता बाधाओं से भरा था

प्रारम्भ में गरीबी के कारण श्रीमती श्यामा देवी और उनके साथी गांव की महिलायें समूह के लिये 100 रूपये की छोटी राशि का भी योगदान नही कर पा रही थी, जिसके कारण समूह टूटने के कगार पर पहुंच गया। ऐसी स्थिति में सदस्य, समूह से अपने नाम वापस लेने के लिये ब्लाक अधिकारियों से संपर्क करने लगे। तभी के.वी.के. और ब्लाक के अधिकारियों ने महिला समूहों को सफलतापूर्वक समूह चलाने के लिए प्रेरित व शिक्षित किया और उनके उत्थान के लिये विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक किया। तत्पश्चात् समूह जनवरी 01, 2014 को एक बार पुनः गठित हुआ।

के.वी.के. का सहयोग

गांव के महिला समूहों के सशक्तिकरण में अपना योगदान प्रदान करने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी ने श्रीमती श्यामा के साथ हाथ मिलाया और सकारात्मक सोच के साथ अपना का शुरू किया। के.वी.के. ने महिला समूह को खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग, संरक्षण तकनीक, पर्यावरण संरक्षित बैग एवं जूट के बैग, मूल्य संवर्द्धन आदि के प्रशिक्षण के साथ–साथ ऐसे उत्पादों के विपणन के बारे में कुशलता से सीखने के लिये प्रेरित किया। स्वयंसहायता समूहों को जूट बैग बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस उद्यम में के.वी.के. ने उन्हें डिजाइनर बैग बनाने, ब्लाक प्रिंटिंग आदि पर प्रशिक्षण प्रदान करके मूल्यवर्द्धन में मदर की। इस बीच, जिले में पालीथीन बैग पर प्रतिबंध के कारण, समूह ने खुद को गैर–बुना पर्यावरण के अनुकूल बैग के उत्पादन मे प्रशिक्षित किया, जो उस समय उच्च मांग पर थे। इसलिये इसने अन्य महिलाओं को भी समूह में शामिल होने और विभिन्न पहलुओं पर काम शुरू करने का रास्ता दिखाया।

वित्तीय लाभ

के.वी.के. ने महिला समूहों को सरकार की विभिन्न विकासात्मक योजनाओं जैसे कि टेक होम राशन आदि के बारे में जागरूक करने में मदद की। समूह भी राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के साथ जुड़ गया और अपने भविष्य के प्रयासों के लिये रु. 1,00,000.00 की राशि प्राप्त की। अब समूह के सदस्यों ने विभिन्न आंगनबाड़ियों की आपूर्ति के लिये घर पर राशन की पैकेजिंग का काम शुरू कर दिया। एक सफल महिला के रूप में श्यामा ने अन्य महिलाओं को प्रेरित किया और फलों एवं सब्जियों के संरक्षण जैसे अन्य क्षेत्रों पर काम करना शुरू किया। परिणाम स्वरूप समूह का वार्षिक कारोबार रु.1,14,00,000.00 जबकि एक समूह के सदस्यों की कुल वार्षिक बचत लगभग रु. 24,000.00 हो गया है। इसने उन्हे न केवल आर्थिक रूप से स्वतन्त्र बनाया, बल्कि समाज की अन्य कमजोर गरीब महिलाओं के लिये भी प्रेरणा स्रोत बनी।

सक्रिय समाजिक कार्यकर्ता

न केवल आर्थिक सशक्तिकरण, बल्कि समूह अन्य सामाजिक गतिविधियों में भी संलग्न है। समूह के सदस्य निःशुल्क पानी फिल्टर, पंखे, शौचालय तैयार करने और स्वच्छता सेवा अभियान में सक्रिय योगदान देकर गरीब आंगनबाड़ियों के लिये काम करे रहे हैं।

पुरस्कार और मान्यतायें

महिला कृषक को सम्मानित करते हुए भूतपूर्व कुलपति

कड़ी मेहनत और समर्पण के लिये श्यामा देवी को के.वी.के., ढकरानी द्वारा पुरस्कार के लिये नामित किया गया, जिसे अक्टूबर 05, 2018 को गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के कुलपति द्वारा उसे सम्मानित किया गया। समूह के उत्कृष्ट कार्य को देखते हुए श्रीमती मनीषा पंवार, निदेशक, उत्तराखण्ड राज्य आजीविका मिशन द्वारा उत्तराखण्ड हिमान्या सरस मेला में भी सम्मानित किया गया था। इस सफलता के बाद महिला जागृति समूह ने 14 समान समूहों के साथ ब्लाक मिशन प्रभाण्डक की मदद से जून 23, 2018 को जय माता दी, ग्राम संगठन की भी स्थापना की।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) राज्य के गन्ना पर्यवेक्षक/निरीक्षक, प्रसार कर्मी, कृषि एवं भूमि संरक्षण अधिकारी, मधुमक्खी पालक, रेशम पालक, मत्स्य पालक, एफ.एफ.डी.ए. के सदस्य, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.), ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.) एवं प्रगतिशील कृषकों हेतु रबी फसलोंत्पादन की उन्नत तकनीक, गन्ना उत्पादन की उन्नत तकनीकी, औषधीय एवं सगन्ध पौध उत्पादन की उन्नत तकनीकी तथा मूल्य संवर्धन, शीतजल मत्स्य पालन तकनीकी, मृदा एवं जल संरक्षण तकनीक,

मधुमक्खी पालनः एक लाभकारी व्यवसाय, रेशम पालनः आय एवं स्वरोजगार का साधन तथा पुष्पों की उन्नत खेती एवं मूल्यवर्धन पर कुल 08 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 171 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षणों का आयोजन प्रशिक्षण समन्वयक, डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) के मार्गदर्शन में किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 18 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के विषय पशुधन प्रबन्धन, कृषि विविधीकरण, मधुमक्खी पालन, पशुपोषण, दुग्ध पदार्थों का उत्पादन इत्यादि से सम्बन्धित थे, जिससे कुल 524 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम डा. एस.के. बंसल, प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण के दिशा निर्देशन में सम्पादित किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पंतनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से किसानों ने कुल 283 प्रश्न पूछे, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के कुल 947 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 77,690.00 के साहित्य एवं रू. 2,33,700.00 के विभिन्न सब्जियों के बीज क्रय किये गये। एटिक की गतिविधियों का संचालन डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य)/प्रभारी अधिकारी एटिक के मार्गदर्शन में किया गया।

एटिक का भ्रमण करते हुए छात्र–छात्राएं

इनपुट डीलरों हेतु डिप्लोमा कोर्स

प्रसार शिक्षा निदेशालय, समेटी–उत्तराखण्ड के अन्तर्गत संचालित हो रहे डिप्लोमा कोर्स–डेसी (Diploma in Agriculture Extension Services for Input Dealers)-DAESI, जिसमें ऊधमसिंहनगर जिले के 40 बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक विक्रेता पंजीकृत हैं, हेतु विभिन्न कक्षाएं एवं परीक्षा सतत् रूप से संचालित हो रही हैं। प्रतिभागियों को फूलोत्पादन, रेशम पालन, औषधीय एवं सगन्ध पौध, कटाई उपरान्त की तकनीक, प्रसार की विधियों, सूचना तकनीक का प्रयोग, फसल बीमा, एस.आर.आई. तकनीक, तनाव प्रबन्धन जैसे विषयों पर समुचित जानकारी दी गई। कक्षाओं का आयोजन डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान के मार्गदर्शन में सम्पादित हुआ।

डिप्लोमा कोर्स डेसी की प्रायोगिक कक्षा का आयोजन

आगामी त्रैमास (जनवरी-मार्च, 2020) में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु

- गेंहू में चौड़ी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु मेटसल्फ्यूरान+सल्फो सल्फ्यूरान 30 ग्राम+2 ग्राम/है. की दर से 600–800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई से 25–30 दिन के अन्दर छिड़काव करें। रसायन प्रयोग के समय खेत में नमी होनी चाहिए।
- गेंहू में पीला रतुआ रोग का प्रकोप होने पर प्रोपीकोनाजोल 500 मिली. या हैक्साकोनेजोल 1 लीटर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। पर्वतीय क्षेत्र में गेंहू में पर्याप्त नमी होने पर असिंचित दशा में 0.5 कि.ग्रा. व सिंचित दशा में 2–2.5 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली की दर से डालें।
- दलहनों के उकठा रोग नियंत्रण हेतु बुवाई से एक दिन पूर्व कार्बेडाजिम 1 ग्राम+थीरम 2 ग्राम अथवा कार्बोक्सीन 1 ग्राम+थीरम 2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीज का शोधन करें।
- मसूर, मटर व चना में रतुआ रोग के नियंत्रण के लिए 2.0 कि.ग्रा. मैंकोजेब अथवा 500 मिली.ट्राइडोमार्फ 80 ई.सी./है. की दर से 600–800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। चने में फलीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 ई.सी. की 1.25 लीटर या साइपरमेथ्रिन 500–600 मिली. को 600–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें।
- मटर और मसूर में सफेद विगलन रोग दिखने पर कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- सरसों एवं तोरिया में माहू कीट का प्रकोप होने पर 1 लीटर डाइमेथोएट 30 ई. सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. का 1.4 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में जनवरी माह में घाटियों में आलू, लोबिया, राजमा, भिण्डी एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें। यदि अब तक प्याज की रोपाई न किये हों तो यथाशीघ्र सम्पादित करें।
- पाला की सम्भावना होने पर पपीते के बाग में सिंचाई करें तथा धुंआ करें।
- फरवरी के दूसरे पखवाड़े में सूरजमुखी की बुवाई करें।
- फरवरी माह में मैदानी क्षेत्रों में बैंगन की 60X45 सें.मी. की दूरी पर रोपाई करें।
- पालक, मैंथी एवं धनिया में कीटों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत रोगोर कीटनाशी का एक छिड़काव करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में फरवरी माह में आलू की अगेती बुवाई 45–60 से.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में 15–20 से.मी. की दूरी पर 5–7 से.मी. गहराई पर करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में फरवरी माह में टमाटर, शिमला मिर्च की नर्सरी डालें एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें।
- मार्च माह में उर्द एवं मूंग की क्रमशः 30–35 कि.ग्रा. एवं 25–30 कि.ग्रा. बीज की प्रति है. दर से बुवाई करें।
- पर्वतीय क्षेत्र में मार्च माह में चना, मटर के पत्ती सुरंगक व फली छेदक कीट तथा मसूर के माहू कीट के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 15 मिली. दवा को 16–20 लीटर पानी में घोलकर प्रति नाली की दर से छिड़काव करें।

पशुपालन हेतु

- मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटें। मुर्गी घरों में दिन और रात को कुल 16 घंटे प्रकाश बनाए रखें।
- फरवरी माह में चूजे पालने की व्यवस्था करें।
- व्यस्क पशुओं को फरवरी माह में अंतःकृमि नाशक दवा पिलाएं। छः माह की

उम्र के बच्चों को मुंहपका, खुरपका रोगों से बचाव हेतु टीका लगवाएं।

- पशुओं को अफरा से बचाव हेतु फूली हुई बरसीम न खिलाएं। अफरा होने पर उपचार हेतु 500 मिली. सरसों का तेल, 100 ग्राम काला नमक, 50 ग्राम मीठा सोडा, 15 ग्राम अजवाईन तथा 10 ग्राम हींग का मिश्रण खिलाएं।

प्रसार शिक्षा निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा जनपद–इलाहाबाद एवं श्रावस्ती में एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु अक्टूबर 08–12, 2019 तक स्थल चयन समिति के सदस्य के रूप में प्रतिभाग किया गया।
- संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा डा. अनुराधा दत्ता, डा. बी.एस. कार्की प्राध्यापक सस्य, डा. आर.के. शर्मा प्राध्यापक, डा. संजय चौधरी प्राध्यापक एवं डा. जितेन्द्र क्वात्रा प्राध्यापक द्वारा दिसम्बर 06–07, 2019 एवं दिसम्बर 10–11, 2019 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल), मटेला (अल्मोड़ा), लोहाघाट (चम्पावत) एवं गैंना एंचोली (पिथौरागढ़) का भ्रमण किया गया।

107वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा 107वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन पंतनगर में मार्च 03–06, 2020 तक किया जा रहा है, जिसमें कृषि निवेश से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फर्में, स्वयंसेवी संस्थाएं, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की फर्में एवं कृषि से सम्बन्धित शैक्षणिक/शोध संस्थान आदि अपने स्टॉल सहित सादर आमंत्रित हैं। किसान मेले में आयोजित किये जाने वाले प्रमुख कार्यक्रमों के विवरण निम्नवत हैं :–

प्रमुख आकर्षण

- अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदर्शनों का अवलोकन
- आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन
- कृषि उद्योग प्रदर्शनी
- कृषि सूचना केन्द्र का अवलोकन
- उन्नतशील बीज एवं पौधों की बिक्री
- विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री

विशेष कार्यक्रम एवं प्रतियोगितायें

- फल–फूल, शाक–भॉजी एवं परिरक्षित पदार्थों की प्रदर्शनी व प्रतियोगिता 03–04 मार्च
- संकर बछियों की नीलामीः– शैक्षणिक डेरी फार्म, नगला (अपरान्ह् 2.00 बजे) 04 मार्च
- पशु प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिताः– पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय (पूर्वान्ह् 10.00 बजे) 05 मार्च
- विशेष व्याख्यानमालाः– गाँधी हॉल (अपरान्ह् 2.30–3.30 बजे) 03–05 मार्च
- किसान गोष्ठीः– गाँधी हॉल (अपरान्ह् 3.30–6.30 बजे) 03–05 मार्च
- सांस्कृतिक कार्यक्रमः– गाँधी हॉल (सांय 7.00–8.30 बजे) 03–05 मार्च
- समापन एवं पुरस्कार वितरणः– गाँधी हॉल (अपरान्ह् 3.00 बजे) 06 मार्च

मेले में स्टॉल लगाने एवं अन्य सम्बन्धित विशेष जानकारी निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. अनुराधा दत्ता एवं मेला समन्वयक, डा. एस.के. बंसल, प्राध्यापक के दूरभाष संख्या 05944–234812 (कार्या.), 233967 (आवास) एवं मो. 07500241450 से प्राप्त की जा सकती है।

निदेशक की कलम से

विश्व की बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगिकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का आकार निरन्तर घटता जा रहा है। अतः भोजन आपूर्ति हेतु खाद्य उत्पादों के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए खेतों में कीटनाशी, फफूँदनाशी, खरपतवारनाशी व रासायनिक उर्वरकों आदि का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है, जो पर्यावरण, मृदा स्वास्थ्य को नष्ट करते हैं। इनके अनियोजित प्रयोग से सम्पूर्ण वातावरण दूषित हो रहा है व प्रकृति में जैविक व अजैविक पदार्थों के बीच आदान–प्रदान का चक्र (इकोलॉजी सिस्टम) प्रभावित हो रहा है। यह परिवर्तन वातावरण व मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इन सभी समस्याओं के निवारण हेतु हमें ऐसे विकल्प खोजने होगें, जिनके दूरगामी प्रभाव मानव व जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य हेतु लाभदायक सिद्ध हों। इस दिशा में 'जैविक खेती' एक महत्वपूर्ण विकल्प है। 'जैविक खेती उत्पादन' एक स्थाई, विश्वसनीय, प्रदूषण रहित, स्वास्थ्य हेतु लाभकारी एवं रसायन अवशेष रहित खाद्य उत्पादन की पूर्व प्रचलित पारम्परिक तकनीक है। इसके द्वारा गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन के लिए स्थानीय जलवायु के अनुकूल विकसित उत्पादन तकनीकों, जैविक खाद, जैविक कीटनाशक उत्पादन तकनीकों व जैव नियंत्रण की विभिन्न विधियों आदि के सफल प्रबन्धन की जानकारी आवश्यक है। जैविक खेती से जल, मृदा व वातावरण शुद्ध रहेगा व प्रत्येक मनुष्य एवं जीवधारी स्वस्थ रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 'जैविक खेती' को अपनाने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

भारत में 60 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ऐसा है, जहाँ जलवायु की अनुकूलता के कारण जैविक खेती की जा सकती है, जिसमें उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपदों का प्रमुख स्थान है। उदाहरण के तौर पर च्झटल– परम्परागत कृषि विकास योजना व वर्ष 2019–20 में महात्मा गाँधी की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर बीजग्राम योजनान्तर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र तथा आतमा के समन्वय से आयोजित किये जा रहे हैं। 'जैविक खेती' के आधुनिक वैज्ञानिक प्रकरण के व्यापक प्रचार व प्रसार से निःसन्देह उत्तराखण्ड की कृषि में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार 'जैविक खेती' से प्रथम दो–तीन साल तक फसल उत्पादन पर असर पड़ता है व उसके बाद उचित वैज्ञानिक तकनीकों द्वारा उत्पादकता के साथ–साथ आर्थिकी लाभ भी पाया जा सकता है।

कृषि वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वह 'जैविक खेती' की आधुनिक तकनीकों व अनुसंधानों के व्यापक प्रचार–प्रसार द्वारा सुरक्षित पर्यावरण व उत्तम मानव स्वास्थ्य के साथ प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

इस प्रसार पुस्तिका को तैयार करने हेतु बहुमूल्य जानकारियां एवं सामग्री उपलब्ध कराने के लिए लेखकों का आभार प्रकट करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पुस्तिका कृषकों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु उपयोगी सन्दर्भ साहित्य का कार्य करेगी।

(अनुराधा दत्ता)
निदेशक प्रसार शिक्षा

सम्पर्क सूत्र :– डा0 तेज प्रताप, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : कृषिविश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर